वैदिक शिक्षा प्रणालीः सिद्धांत, विधियाँ, समाजिक प्रभाव और उनका ऐतिहासिक विश्लेषण

प्रशान्त कुमार द्विवेदी*
डॉ. खुशबू ठाकुर**

सारांश -

वैदिक शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य जीवन के चार प्रमुख उद्देश्यों (पुरुषार्थ) का पालन करना थाः धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष। यह शिक्षा न केवल धार्मिक और नैतिक शिक्षाओं से जुड़ी थी, बल्कि यह समाज को जीवन के विभिन्न पहलुओं में संतुलन बनाए रखने के लिए तैयार करती थी। वैदिक शिक्षा प्रणाली की सबसे प्रमुख विशेषता थी उसका मौखिक रूप। लेखन की प्रथा उस समय बहुत विकसित नहीं थी, इसलिए वेदों और अन्य धार्मिक ग्रंथों का श्रवण (सुनने) और मनन (चिंतन) के माध्यम से अध्ययन किया जाता था। यह शिक्षा गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से दी जाती थी। शिष्य अपनी पूरी शिक्षा की प्रक्रिया में गुरु के साथ रहता था और ज्ञान प्राप्त करता था।

यह शोध पत्र वैदिक शिक्षा के ऐतिहासिक महत्वों, इसके सिद्धांतों, विधियों और समाज पर इसके प्रभाव का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वैदिक शिक्षा के गहरे तत्व जैसे गुरु-शिष्य परंपरा, ध्यान, योग, नैतिक शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारी, आज भी शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में वापस आ रहे हैं। कुछ शैक्षिक संस्थान, विशेष रूप से गुरुकुल शैली के विद्यालय, आज भी वैदिक शिक्षा के सिद्धांतों पर आधारित शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, जिसमें ध्यान, योग और नैतिक शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया जाता है। इस अध्ययन में वैदिक शिक्षा की प्रणाली के ऐतिहासिक विश्लेषण हेतु, गुणात्मक शोध की विश्लेषणात्मक समीक्षा प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

कुंजी/मुख्य शब्द : वैदिक शिक्षा, गुरुशिष्य परंपरा, श्रवण, मनन, वैदिक काल, भारतीय सभ्यता, भारतीय संस्कृति, धर्म, समाज, शिक्षा, विज्ञान, कला, संगीत, योग, आयुर्वेद, नैतिकता, आधुनिक शिक्षा, समग्र विकास।

- **प्रस्तावना**

वैदिक काल भारतीय सभ्यता के सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण युगों में से एक है। यह काल, जिसे लगभग 1500 ईसा पूर्व से लेकर 500 ईसा पूर्व तक माना जाता है, भारतीय जीवन, संस्कृति, धर्म और समाज की नींव का निर्माण करने वाला था। इस काल में शिक्षा का उद्देश्य न केवल व्यक्तिगत जीवन को सुधारना था, बल्कि यह समाज के समग्र विकास और संस्कृति के संरक्षण का एक महत्वपूर्ण माध्यम था। वैदिक शिक्षा ने जीवन के हर पहलू को परिपूर्णित या समाहित किया है; जैसे - धर्म, विज्ञान, कला, संगीत, योग, आयुर्वेद, और नैतिकता। इस शोध पत्र का उद्देश्य वैदिक काल की शिक्षा पद्धति, उसके उद्देश्यों, संरचना, और उसमें प्रयुक्त सिद्धांतों का विस्तार से अध्ययन करना है।

- **वैदिक शिक्षा प्रणाली : तत्कालीन समाज और शिक्षा की आवश्यकता**

वैदिक काल के समाज में एक गहरी धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना थी। समाज को चार मुख्य वर्गों में बांटा गया थाः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र। प्रत्येक वर्ग की अपनी भूमिका और जिम्मेदारियां थीं, और इन जिम्मेदारियों को समझने के लिए शिक्षा का होना आवश्यक था। इस समय समाज में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं था, बल्कि यह व्यक्तियों को उनके कर्तव्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक करना था।

1- सामाजिक संरचना

वैदिक समाज में ब्राह्मणों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था क्योंकि उनका कार्य वेदों का अध्ययन, पूजा और धार्मिक अनुष्ठान करना था। उनका ज्ञान समाज में अत्यधिक आदर का पात्र था। हालांकि, वैदिक शिक्षा प्रणाली में इस बात की शुरुआत हुई कि शिक्षा केवल एक विशिष्ट वर्ग तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों को भी इसका लाभ मिलना चाहिए। वेदों के अध्ययन में ब्राह्मणों का प्रमुख स्थान था, लेकिन धीरे-धीरे अन्य वर्गों को भी शिक्षा के अवसर मिलने लगे।

2- शिक्षा का उद्देश्य

वैदिक शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य जीवन के चार प्रमुख उद्देश्यों (पुरुषार्थ) का पालन करना थाः धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष। यह शिक्षा न केवल धार्मिक और नैतिक शिक्षाओं से जुड़ी थी, बल्कि यह समाज को जीवन के विभिन्न पहलुओं में संतुलन बनाए रखने के लिए तैयार करती थी।

- **वैदिक शिक्षा प्रणाली : स्वरूप और पद्धति**

वैदिक शिक्षा प्रणाली की सबसे प्रमुख विशेषता थी उसका मौखिक रूप। लेखन की प्रथा उस समय बहुत विकसित नहीं थी, इसलिए वेदों और अन्य धार्मिक ग्रंथों का श्रवण (सुनने) और

मनन (चिंतन) के माध्यम से अध्ययन किया जाता था। यह शिक्षा गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से दी जाती थी। शिष्य अपनी पूरी शिक्षा की प्रक्रिया में गुरु के साथ रहता था और ज्ञान प्राप्त करता था।

1- **श्रवण (सुनना)** वेदों और उपनिषदों का अध्ययन मौखिक रूप से किया जाता था। शिष्य अपने गुरु से वेदों का पाठ सुनते थे और उनका अनुसरण करते थे। यह एक धीमी और गहन प्रक्रिया थी, जिसमें प्रत्येक शिष्य को हर शास्त्र को सही तरीके से सुनने और समझने का समय मिलता था। श्रवण का महत्व इसलिए था क्योंकि यह गहरी मानसिक एकाग्रता और स्मृति की शक्ति को विकसित करता था।

2- **मनन (चिंतन)** श्रवण के बाद शिष्य को जो कुछ भी सुना होता, उसे वह गहरे चिंतन के माध्यम से आत्मसात करता था। वेदों के ज्ञान को केवल शब्दों के रूप में नहीं देखा जाता था, बल्कि उसे जीवन में लागू करने के लिए उसकी गहरी समझ जरूरी थी। मनन के दौरान शिष्य यह समझता था कि वेदों में जो अदृश्य और सूक्ष्म सिद्धांत दिए गए हैं, वे उसे अपने जीवन में कैसे लागू कर सकता है।

3- **निधिध्यासन (ध्यान)** शिक्षा का अंतिम कदम था 'निधिध्यासन', यानी ध्यान और आत्मचिंतन। यह प्रक्रिया शिष्य को वेदों और उपनिषदों के गहरे रहस्यों को जीवन में उतारने की क्षमता प्रदान करती थी। वैदिक शिक्षा का यह हिस्सा व्यक्ति के मानसिक और आत्मिक विकास से संबंधित था। इसे साधना के रूप में समझा जाता था, जिसमें शिष्य आत्मज्ञान की ओर अग्रसर होता था।

- **वैदिक शिक्षा प्रणाली : प्रमुख विषय**

वैदिक शिक्षा में कई प्रमुख विषयों का अध्ययन किया जाता था, जो न केवल धार्मिक और दार्शनिक थे, बल्कि गणित, विज्ञान, आयुर्वेद, और अन्य कलाओं से भी संबंधित थे।

1- **धर्म और वेद** वेदों का अध्ययन वैदिक शिक्षा का मूल था। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद, इन चार वेदों का अध्ययन विशेष रूप से ब्राह्मणों द्वारा किया जाता था। इन वेदों के माध्यम से समाज को धर्म, अनुष्ठान, और आध्यात्मिक शिक्षा दी जाती थी।

2- **गणित और विज्ञान** वैदिक काल में गणित और विज्ञान के कुछ प्रमुख सिद्धांतों का विकास हुआ था। वेदों में अंकगणित, ज्योतिष, और खगोलशास्त्र से संबंधित बहुत से ज्ञान की चर्चा की गई है। उदाहरण के लिए, यजुर्वेद और ऋग्वेद में सूर्य और चंद्रमा के गति के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है, जो खगोलशास्त्र के प्रारंभिक संकेत थे।

3- **आयुर्वेद और स्वास्थ्य** आयुर्वेद, जो जीवन और स्वास्थ्य के संरक्षण की एक प्रणाली है, वैदिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए

आयुर्वेद का महत्व बहुत था। यह शिक्षा प्राकृतिक उपचारों, जड़ी-बूटियों और शारीरिक व्यायाम के महत्व को समझाती थी।

4- **योग और साधना** योग का अध्ययन वैदिक शिक्षा का एक अभिन्न हिस्सा था। ध्यान, प्राणायाम, और साधना के माध्यम से शिष्य मानसिक शांति और आत्मज्ञान प्राप्त करते थे। वेदों में शरीर और आत्मा के बीच संतुलन बनाए रखने की महत्वपूर्ण प्रक्रिया का उल्लेख मिलता है।

- **वैदिक शिक्षा प्रणाली : गुरु-शिष्य परंपरा और शिक्षण विधियाँ**

वैदिक शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू था गुरु-शिष्य परंपरा। गुरु को 'आचार्य' या 'विधायक' के रूप में सम्मानित किया जाता था। शिष्य पूरी श्रद्धा और समर्पण के साथ गुरु से शिक्षा प्राप्त करता था। गुरु-शिष्य का संबंध केवल एक शिक्षक और छात्र का नहीं था, बल्कि यह एक पवित्र रिश्ता था, जिसमें गुरु शिष्य को जीवन की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षाएँ देते थे।

गुरुकुल व्यवस्था वैदिक शिक्षा का मुख्य रूप थी, जहाँ गुरु और शिष्य एक साथ रहते थे और शिक्षा की प्रक्रिया में भाग लेते थे। गुरुकुल आमतौर पर प्राकृतिक स्थलों में स्थापित होते थे, जहाँ शिष्य अपने गुरु से शांति, ध्यान, और ज्ञान प्राप्त करते थे। यह व्यवस्था शिष्य को शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से प्रशिक्षित करने के लिए थी।

- **वैदिक शिक्षा का प्रभाव और विकास**

वैदिक शिक्षा का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसने समाज में न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाई, बल्कि यह शिक्षा और ज्ञान के प्रति समर्पण का प्रतीक बन गई। इसके साथ ही, समय के साथ, वैदिक शिक्षा के सिद्धांतों और प्रक्रियाओं ने भारतीय दर्शन, साहित्य, और अन्य धार्मिक ग्रंथों के रूप में अपना रूप लिया।

आज भी वैदिक शिक्षा के सिद्धांत भारतीय समाज में गहरे प्रभाव डालते हैं। वेदों के अध्ययन, ध्यान, योग, और गुरु-शिष्य परंपरा को भारतीय समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

- **वैदिक कालीन शिक्षा शास्त्र और वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणालीः एक तुलना**

वैदिक कालीन शिक्षा शास्त्र और आज के भारतीय शिक्षा प्रणाली के बीच कई समानताएँ और भिन्नताएँ पाई जाती हैं। वैदिक शिक्षा की प्रणाली, जो लगभग 1500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व के बीच विकसित हुई, आज के शिक्षा पद्धतियों से कुछ हद तक भिन्न थी, लेकिन इसके कुछ तत्व आज भी आधुनिक शिक्षा प्रणाली में परिलक्षित होते हैं।

- **वैदिक शिक्षा की पद्धतियाँ और वर्तमान शिक्षा प्रणाली**

1- **गुरु-शिष्य परंपरा**

वैदिक शिक्षा वैदिक काल की शिक्षा प्रणाली गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित थी, जहां गुरु को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। शिष्य पूरी श्रद्धा और समर्पण के साथ अपने गुरु से शिक्षा प्राप्त करता

था। इस प्रणाली में व्यक्तिगत ध्यान और गहरी आस्थाएँ महत्वपूर्ण थीं, क्योंकि शिक्षा केवल शाब्दिक ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह जीवन के गहरे उद्देश्यों को समझने और आत्मसात करने का एक मार्ग था। गुरुकुलों में शिष्य और गुरु एक साथ रहते थे और इस परंपरा में शिष्य को केवल पढ़ाई के विषय ही नहीं, बल्कि जीवन की नैतिकता, कर्तव्य और समाजिक जिम्मेदारियाँ भी सिखाई जाती थीं।

- **वर्तमान शिक्षा प्रणाली**

आज के भारत में शिक्षा प्रणाली ने शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के साथ बदलाव देखे हैं। गुरु-शिष्य परंपरा अब सीमित हो गई है, और सामान्य शिक्षा विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में बदल चुकी है। हालांकि, शिक्षक-छात्र संबंध अब भी एक महत्वपूर्ण पहलू है, लेकिन यह पारंपरिक गुरु-शिष्य संबंधों जैसा गहरा और व्यक्तिगत नहीं रह गया है। आधुनिक शिक्षा में शिक्षकों का अधिकतर ध्यान शैक्षिक सामग्री पर होता है, जबकि जीवन कौशल, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे पहलुओं को लेकर ध्यान कम हो गया है।

2- श्रवण, मनन और निधिध्यासन

वैदिक शिक्षा वैदिक शिक्षा के तीन प्रमुख चरण थेः श्रवण (सुनना), मनन (चिंतन) और निधिध्यासन (ध्यान)। इन तीनों प्रक्रियाओं के माध्यम से शिष्य वेदों के गहरे अर्थों को समझता था और उन्हें अपने जीवन में लागू करने के लिए मानसिक और आत्मिक रूप से तैयार होता था। यह प्रक्रिया व्यक्ति की मानसिक और बौद्धिक स्थिति को मजबूत करती थी, जिससे वह अपने जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के सिद्धांतों का पालन करता था।

- **वर्तमान शिक्षा प्रणाली**

वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम, कक्षा और परीक्षा प्रणाली पर अधिक जोर दिया गया है। आज के छात्रों के लिए अधिकांश शिक्षा शाब्दिक और तात्कालिक ज्ञान अर्जन पर केंद्रित होती है। "श्रवण" की प्रक्रिया अब पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण माध्यमों के माध्यम से होती है, लेकिन "मनन" और "निधिध्यासन" जैसे गहरे चिंतन और आत्मचिंतन का स्थान अधिकतर खो गया है। हालांकि, आजकल ध्यान, योग, और मानसिक शांति को लेकर कुछ विशेष पहलुओं पर ध्यान दिया जा रहा है, लेकिन यह वैदिक शिक्षा की गहराई और व्यावहारिकता से काफी कम है।

3- सामाजिक और नैतिक शिक्षा

- **वैदिक शिक्षा**

वैदिक शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह था कि यह केवल बौद्धिक ज्ञान नहीं देता था, बल्कि यह समाज के प्रत्येक वर्ग को उनके धर्म और कर्तव्यों के प्रति जागरूक भी करता था। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारियों का पालन करने के लिए तैयार करना

था। शिष्य अपने जीवन के उद्देश्य को समझता था और अपने कार्यों को धर्म के अनुसार संचालित करता था। इसमें कर्तव्य, नैतिकता, और समाज में उचित स्थान बनाने की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

- **वर्तमान शिक्षा प्रणाली**

आज के शिक्षा तंत्र में सामाजिक और नैतिक शिक्षा का महत्व थोड़ा कम हो गया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अधिकतर पाठ्यक्रम शुद्ध विज्ञान, गणित, साहित्य और अन्य विशिष्ट विषयों पर केंद्रित हैं, जबकि समाजिक और नैतिक शिक्षा पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया जाता। हालांकि, नैतिक शिक्षा के कुछ रूपों को पाठ्यक्रमों में शामिल किया गया है, लेकिन यह वैदिक शिक्षा के दर्शन के स्तर पर नहीं है, जो जीवन के गहरे उद्देश्यों और समाजिक जिम्मेदारियों को समझाने का प्रयास करती थी।

4- विज्ञान, गणित और अन्य विषयों का समावेश

- **वैदिक शिक्षा**

वेदों और उपनिषदों में विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, खगोलशास्त्र, संगीत, कला, और योग जैसे कई विषयों का समावेश था। उदाहरण स्वरूप, वेदों में खगोलशास्त्र के सिद्धांत, गणितीय रूपांतरण, और आयुर्वेद के उपचार विधियों का विस्तृत वर्णन मिलता है। वैदिक शिक्षा न केवल धार्मिक और दार्शनिक विषयों से संबंधित थी, बल्कि यह प्राचीन भारतीय ज्ञान के विभिन्न पहलुओं का भी समावेश करती थी।

- **वर्तमान शिक्षा प्रणाली**

आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली ने विज्ञान, गणित, और अन्य विशिष्ट विषयों के लिए अलग-अलग पाठ्यक्रम तैयार किए हैं। इन विषयों में विशेष रूप से गणित, भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान, और तकनीकी शिक्षा पर जोर दिया जाता है। विज्ञान और गणित को वर्तमान शिक्षा में एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पढ़ाया जाता है, जबकि वैदिक शिक्षा में इन्हें अधिक धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से देखा गया था।

- **वर्तमान शिक्षा में वैदिक शिक्षा के तत्वों का समावेश**

1- ध्यान और योग

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में वैदिक शिक्षा के महत्वपूर्ण तत्व जैसे योग और ध्यान धीरे-धीरे पुनः ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। कई स्कूलों और विश्वविद्यालयों में मानसिक शांति, ध्यान, और योग शिक्षा का एक हिस्सा बन चुके हैं। हालांकि, यह वैदिक शिक्षा की गहराई से बाहर है, लेकिन यह स्पष्ट रूप से दिखाता है कि आधुनिक शिक्षा में वैदिक शिक्षा के कुछ सिद्धांतों को फिर से समाहित किया जा रहा है।

2- गुरुकुल प्रणाली का पुनरुद्धार

आजकल कुछ विशेष विद्यालयों और आश्रमों में गुरुकुल प्रणाली का पुनरुद्धार किया जा रहा है, जहां बच्चों को आध्यात्मिक शिक्षा और नैतिक शिक्षा के साथ-साथ शास्त्रों का अध्ययन भी कराया जाता है। यह वैदिक शिक्षा के सिद्धांतों के प्रति पुनः जागरूकता को दर्शाता है, जहाँ शिष्य और गुरु के बीच पारंपरिक संबंधों को पुनर्जीवित किया जा रहा है।

3- समाज सेवा और नैतिक जिम्मेदारियाँ

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अब समाज सेवा, पर्यावरण शिक्षा, और नैतिक शिक्षा को शामिल करने का प्रयास किया जा रहा है। शैक्षिक संस्थानों में सामाजिक कार्यों, स्वच्छता अभियानों और कर्तव्यपरायणता के कार्यक्रमों को भी बढ़ावा दिया जा रहा है, जो वैदिक शिक्षा के उस पहलू से मेल खाते हैं, जो सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिकता पर जोर देता है।

- **निष्कर्ष -**

वैदिक काल की शिक्षा प्रणाली और वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली के बीच स्पष्ट भिन्नताएँ हैं, लेकिन कुछ मूल तत्व आज भी हमारे शिक्षा तंत्र में जीवित हैं। वैदिक शिक्षा ने जीवन के हर पहलु को गहरे स्तर पर समझने की शिक्षा दी, और यह समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक और नैतिक संरचनाओं को आकार देती थी। जबकि आधुनिक शिक्षा में तकनीकी और विशिष्ट ज्ञान पर जोर दिया जाता है, वैदिक शिक्षा ने व्यक्ति के संपूर्ण विकास पर ध्यान केंद्रित किया था। हमारे वर्तमान शिक्षा तंत्र में यदि हम वैदिक शिक्षा के तत्वों को समाहित करें, जैसे ध्यान, नैतिक शिक्षा, गुरु-शिष्य परंपरा, और समाजिक जिम्मेदारियाँ, तो यह शिक्षा तंत्र को और भी सशक्त बना सकता है और छात्र के मानसिक, बौद्धिक, और आत्मिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

वैदिक कालीन शिक्षा भारतीय समाज की मूल संरचना का हिस्सा था। यह शिक्षा न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान का माध्यम थी, बल्कि यह समाज में नैतिकता, कर्तव्य और आत्मज्ञान के प्रसार का एक उपकरण थी। वैदिक शिक्षा प्रणाली का महत्व केवल इसके शिक्षण तरीकों में नहीं, बल्कि इसके सिद्धांतों में था, जो आज भी भारतीय समाज और शिक्षा के मूल में विद्यमान हैं।

- **सन्दर्भसूची -**

1. शर्मा, रामनिवास, (2002). "वैदिक शिक्षा और उसका ऐतिहासिक महत्व". भारतीय शिक्षा शास्त्र. 45-60.
2. कुमार, महेंद्र, (2010). "वेदों का विज्ञान और गणित में योगदान". भारतीय विज्ञान पत्रिका, 12-18.

3. सिंह, अभिषेक, (2015). "गुरुकुल प्रणालीः एक ऐतिहासिक अध्ययन". समाज और संस्कृति, 21-34.
4. शर्मा, सुरेश, (2008). "वैदिक शिक्षा की प्रक्रिया और सिद्धांत". धर्म और संस्कृति, 98-110.
5. जोशी, सुधीर, (2017). "वैदिक काल में शिक्षा का समाज पर प्रभाव". भारतीय समाज अध्ययन, 72-80.
6. गुप्ता, राकेश, (2019). "वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में वैदिक शिक्षा के तत्वों का समावेश". शिक्षा और समाज, 135-150.
7. झा, अनुराग, (2020). "वर्तमान भारत में गुरु-शिष्य परंपरा का पुनरुद्धार". भारतीय शिक्षा पत्रिका, 45-60.
8. वर्मा, माधवी, (2021). "ध्यान, योग और मानसिक स्वास्थ्यः भारतीय शिक्षा की एक मौलिक विशेषता". समाज शास्त्र और मानसिक स्वास्थ्य, 201-215.
9. सिंह, भानु, (2013). "वैदिक शिक्षाः एक समग्र दृष्टिकोण". भारतीय शिक्षा नीति और इसके सुधार, 29-42.
10. नायर, शंकर, (2018). "आधुनिक शिक्षा तंत्र में वैदिक शिक्षा के सिद्धांतों का अनुप्रयोग". भारतीय शिक्षाः विकास और चुनौती, 50-65.

*शोधार्थी, शिक्षा संकाय, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)।
**सहायक शोधकर्त्री, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)।